शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के कुछ पारंपरिक एवं आधुनिक तरीकों का तुलनात्मक अध्ययन

कुमारी पूजा रानी (हिंदी विभाग), अनुसंधानकर्ता, ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्ज़ापुर, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. मोहम्मद कामिल(हिंदी), प्रोफेसर (हिंदी विभाग), ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्ज़ापुर, सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सार:

समय के साथ शिक्षण और सीखने के तरीके बदल गए हैं। पारंपरिक तरीकों का स्थान आधुनिक तरीकों ने ले लिया है। ऑडियो विजुअल मुख्य धारा में हैं जिसने पूरे परिदृश्य को बदल दिया है। सीखने के विभिन्न तरीके, जो या तो शिक्षक केंद्रित हो सकते हैं या छात्र केंद्रित हो सकते हैं, शिक्षण सिद्धांतों से बेहतर हैं। सीखने की पिछली शिक्षण विधियों में ऐसी स्थितियाँ शामिल होती हैं जहाँ छात्रों को व्याख्यान-आधारित प्रारूप का उपयोग करके सामग्री वितरित की जाती है, लेकिन सीखने का एक अधिक आधुनिक दृष्टिकोण रचनावाद है। वर्तमान अध्ययन पारंपरिक और आधुनिक दोनों ढांचे में विभिन्न दृष्टिकोणों तक पहुंच बनाएगा।

विशेष शब्द : शिक्षण, सीखना, विधियाँ, तकनीकें, दृष्टिकोण

I. प्रस्तावना

शिक्षण का पेशा सभी पेशों में से सबसे मूल्यवान और महत्वपूर्ण पेशा है क्योंकि शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता माना जाता है। पेशे को न्याय दिलाने के लिए शिक्षकों पर शिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने का अतिरिक्त बोझ या समस्या नहीं होनी चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ रहा था और वे सभी सामाजिक आयोजनों से मुक्त थे। यद्यपि वह व्यवस्था को सुसंगत बनाने के लिए अत्यधिक प्रयास कर रहे हैं, लेकिन आज के शिक्षक असंख्य समस्याओं से पीड़ित हैं और उनके विभिन्न प्रयासों के बावजूद, उन्हें अभी भी बलि का बकरा बनाया जा रहा है और समाज शिक्षकों की बेरहमी से आलोचना कर रहा है। यह सच है कि पिछले शिक्षक की तुलना में वर्तमान शिक्षक की भूमिका में बदलाव आया है। वर्तमान शिक्षकों की एक आलोचनात्मक परीक्षा से पता चला कि देश के वर्तमान सजावटी शैक्षिक मानकों में तुलनात्मक रूप से एक छोटी भूमिका निभाती है। निजी और सरकारी दोनों ही क्षेत्रों में शिक्षकों की स्थिति इतनी महत्वहीन है कि वे आधुनिक शिक्षा की चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ हैं। उन्हें समाज की बाधाओं और चिंताओं का सामना करना पड़ता है जिससे समाज के समग्र विकास पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है।

किसी राष्ट्र के जीवन में इतिहास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान की नींव अतीत में रखी जाती है। वर्तमान और भविष्य एक सातत्य स्थापित करते हैं। अतीत में वर्तमान को प्रभावित करने और भविष्य में घटनाओं को निर्देशित और पुनर्निर्देशित करने की जबरदस्त शक्ति होती है। यह कथन भारत के शिक्षण पेशे के मामले में भी सत्य है। इसलिए, भारतीय शिक्षण पेशे का कोई भी अध्ययन तब तक अधूरा रहेगा जब तक कि इसे इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में न बनाया जाए।

संसाधन और शिक्षण महत्वपूर्ण कारक हैं जो शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता को उन्नत करने में मदद करते हैं। इसमें शिक्षण सहायक सामग्री शिक्षण और सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। डेटा इस तथ्य को दर्शाता है कि शिक्षकों को अपने स्कूलों में आवश्यक संसाधन

नहीं होने का खामियाजा भुगतना पड़ा। अधिकांश शिक्षण संस्थानों में बुनियादी सुविधाएं नहीं हैं और दूर-दराज के इलाकों के स्कूलों में तो यह स्थिति है। बुनियादी शिक्षण संसाधन पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, कंप्यूटर प्रयोगशालाओं, संसाधन कक्षों और इन संसाधनों को खरीदने के लिए वित्तीय संसाधनों की कमी से भिन्न होते हैं। शैक्षणिक संसाधनों की कमी के कारण शिक्षक अपनी योजनाओं के अनुसार नहीं पढ़ा पाते। छात्रों और शिक्षकों को अपने अध्ययन कौशल में सुधार करने के लिए पुस्तकालयों की आवश्यकता है। छात्रों को व्यावहारिक कार्य और प्रयोग करने के लिए प्रयोगशालाओं की भी आवश्यकता होती है। हालाँकि उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है, लेकिन अब आसान स्कूली शिक्षा के लिए इनकी आवश्यकता है।

सीखने के विभिन्न तरीके, जो या तो शिक्षक केंद्रित हो सकते हैं या छात्र केंद्रित हो सकते हैं, शिक्षण सिद्धांतों से बेहतर हैं। छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण एक शिक्षण पद्धति है जहां शिक्षक और छात्र दोनों सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। शिक्षण की पारंपरिक ब्लैक बोर्ड पद्धति जो वर्षों से चली आ रही है, अब अधिक आधुनिक और क्रांतिकारी शिक्षण विधियों (जैक्सन, 2012) की तुलना में घटिया परिणाम प्राप्त कर रही है। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में यह भी पाया गया है कि कक्षा में पारंपरिक व्याख्यान दृष्टिकोण शिक्षण और सीखने दोनों में सीमित प्रभावशीलता का है (दामोधरन और रेंगराजन, 2013) | सीखने के पिछले निष्क्रिय दृष्टिकोण में ऐसी स्थितियाँ शामिल होती हैं जहाँ व्याख्यान-आधारित प्रारूप का उपयोग करके छात्रों को सामग्री वितरित की जाती है, लेकिन सीखने का एक अधिक आधुनिक दृष्टिकोण रचनावाद है (बढ़ई, 2006) जहाँ छात्र केवल प्रस्तुत किए गए संस्करणों को अवशोषित करने के बजाय वास्तविकता का अपना संस्करण बनाते हैं। उनके शिक्षक)। वर्तमान अध्ययन शिक्षण और सीखने के तरीकों और उनके पेशेवरों और विपक्षों का विश्लेषण करेगा |

II आधुनिक शिक्षण विधियाँ

सॉफ़्टवेयर प्रोग्राम: बहीखाता पाठ्यक्रमों में पीसी और पीसी कार्यक्रमों के विस्तारित उपयोग से महत्वपूर्ण समय आरक्षित निधि, दिशा की अव्यवस्था और सीखने की प्रक्रिया के उन्नयन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है; इसके अलावा, यह लेखन, पत्राचार, सहयोग, समुदाय, बुनियादी तर्क और जागरूकता (बॉयस, 1999) सहित विशिष्ट क्षमताओं की उन्नति में मदद करता है। विभिन्न शिक्षण और सीखने के उद्देश्यों की पूर्ति को सशक्त बनाने वाले बहीखाता पाठ्यक्रमों के शिक्षण के लिए प्रोग्रामिंग कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का उपयोग किया जाता है। वास्तव में, पीसी का उपयोग प्रोग्रामिंग के उपयोग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षण सामग्री प्राप्त करने के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इंटरनेट के उपयोग तक पहुंचता है। इसके बावजूद कि पीसी के उपयोग से शिक्षण और बहीखाता पद्धति का लाभ होता है, यह महत्वपूर्ण है कि शैक्षिक सामग्री और शैक्षिक प्रक्रिया के परिणाम से संबंधित मुद्दे भी सामने आ सकें; ऐसा तब होता है जब पीसी का उपयोग निर्मित शिक्षाप्रद आदर्श मॉडलों पर महत्व (या ध्यान केंद्रित किए बिना) किया जाता है (बॉयस, 1999)। हालाँकि, बॉयस (1999) के अनुसार उपयोग की जाने वाली प्रोग्रामिंग के मुख्य प्रकारों में शामिल हैं: उत्पादकता प्रोग्रामिंग: मुख्य रूप से प्रशिक्षण के लिए छात्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पॉइंट और गतिविधियों के प्रोग्राम-बैंक (यानी प्रोग्रामिंग अनुप्रयोगों के समूह) शामिल हैं; विभिन्न निर्णय प्रश्न, परीक्षण इत्यादि जिनका उपयोग

बहीखाता विचारों को बेहतर ढंग से समझने के लिए किया जा सकता है। वैध इनपुट के साथ, छात्र अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं और सिखाए गए विषय के महत्वपूर्ण उद्देश्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इन परियोजनाओं का उद्देश्य छात्रों में बुनियादी बहीखाता गतिविधियों को समझना और इसके अलावा दिए गए विकल्पों में से पहचानने, तोड़ने, अनुवाद करने और चुनने की क्षमता जैसी योग्यताएं पैदा करना है (बॉयस, 1999) | इसके बाद, गुजराती (2005) ने बहीखाता चक्र के मुद्दे को प्रबंधित करने और देखभाल करने के लिए एक स्प्रेडशीट लाभप्रदता कार्यक्रम (एंटरप्राइज़ रिसोर्स प्लानिंग सिस्टम द्वारा प्रोग्रामिंग अनुरोध, मौद्रिक रिकॉर्ड इत्यादि चलाने वाले) के उपयोग के परिणामों की शुरुआत की। इस कार्यक्रम के उपयोग का उद्देश्य छात्रों को बहीखाता संबंधी गलतियों जैसी सम्मिलित आवश्यकताओं के साथ कॉपी-किताबें रखने में समझ प्रदान करना है। ईआरपी प्रोग्रामिंग के उपयोग के संबंध में छात्रों की प्रतिक्रियाएँ अत्यधिक सकारात्मक थीं। उनमें से प्रमुख भाग ने तर्क दिया कि ऐसी प्रोग्रामिंग आधारित प्रणाली के उपयोग से अधिक नियमित (प्रथागत) शिक्षण तकनीकों के संबंध में बहीखाता सीखने में मदद मिली |

अभ्यास और अभ्यास प्रोग्रामिंग: इसमें बहीखाता मुद्दों के लिए कार्यक्रम शामिल हैं जिनके साथ छात्रों को अपने गलत कदमों का अभ्यास करने और सुधारने का मौका मिलता है। अंत में, प्रदर्शन प्रोग्रामिंग और पुनर्मूल्यांकन प्रोग्रामिंग। पिछली परियोजनाओं में एक बहीखाता मुद्दा बनाने के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्रदर्शन और पुनर्मूल्यांकन शामिल है, जिसे छात्र वास्तविकता में (पुनर्निर्मित) वास्तविकता की स्थितियों के तहत उजागर करने का प्रयास कर रहे हैं (बॉयस, 1999)। उपरोक्त के अनुसार, हॉफजन (2005) ने छात्रों को बेहतर बहीखाता विचारों को प्रशिक्षित करने के लिए एक आम तौर पर तुलनीय व्यावसायिक मनोरंजन का उपयोग किया। डायवर्सन कैल्वाडोस नामक एक संगठन के आसपास स्थापित किया गया था जो फ्रांसीसी सेब शराब बनाता था। हॉफजन (2005) ने गारंटी दी कि मनोरंजन ने संगठन की विकेन्द्रीकृत इकाइयों की योजना बनाने की समस्याओं के प्रति छात्रों की प्रभावकारिता को बढ़ाया है [30]। ग्रीन और काल्डेरन (2005) ने प्रशासन की जबरन वसूली को समझने की छात्रों की क्षमता पर संभावित मनोरंजन (वास्तविकता-आधारित पुनर्मूल्यांकन) के प्रभाव पर विचार किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सटीक प्रतिकृतियों के साथ प्रशिक्षित छात्रों को शामिल जोखिमों की बेहतर समझ थी और कुशल दिशानिर्देशों को लागू करने में बेहतर फिटनेस और परिणामों पर भी भरोसा था। उन दो मामलों में छात्र स्वयं पूरी सीखने की प्रक्रिया में विशेष विविधताओं के महत्व के बारे में असाधारण रूप से उत्साहित और सकारात्मक थे। विभिन्न पीसी प्रोग्रामों के उपयोग के बारे में मौलिक चिंता यह है कि क्या एक सीधा शिक्षण उपकरण जो खुद को प्रदर्शित करने में ज्यादा समय नहीं लगाता है, बहीखाता पद्धति को एक पेशेवर शिक्षण व्यवसाय में बदल सकता है, इसके विद्वत्तापूर्ण माप को गिरा सकता है और पाठ्यक्रम पर किसी भी शैक्षणिक नियम के विचार को मिटा सकता है। इसमें आम तौर पर शामिल लोगों के कामकाजी समर्थन की आवश्यकता होती थी (चोरोवर, 1984; बॉयस, 1999)|

गायन विधि : इस पद्धति का एक प्रमुख पहलू प्राथमिक शिक्षण उपकरण के रूप में हिंदी गीतों का उपयोग है। शिक्षार्थियों को गीत और धुन पर ध्यान देते हुए हिंदी गाने सुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। गानों की आकर्षक धुनें और लय शब्दावली और व्याकरण संरचनाओं

को याद रखने और बनाए रखने में मदद करती हैं। गानों के साथ गाने से शिक्षार्थियों को उच्चारण और स्वर-शैली का अभ्यास करने में मदद मिलती है, जिससे उन्हें हिंदी बोलने का कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

प्रौद्योगिकी और इंटरनेट के आगमन के साथ, हिंदी गानों के विशाल संग्रह तक पहुंच पहले से कहीं ज्यादा आसान हो गई है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और स्ट्रीमिंग सेवाएँ शिक्षार्थियों को चुनने के लिए शैलियों और कलाकारों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती हैं। यह शिक्षार्थियों को भाषा में डूबते हुए विभिन्न संगीत शैलियों का पता लगाने की अनुमति देता है। कुछ प्लेटफ़ॉर्म भाषा सीखने वालों के लिए विशेष रूप से क्यूरेटेड प्लेलिस्ट भी प्रदान करते हैं, जिससे उनकी दक्षता के स्तर के अनुरूप गाने ढूंढना अधिक सुविधाजनक हो जाता है। सीखने के अनुभव को बढ़ाने के लिए, कई संसाधन और उपकरण उपलब्ध हैं जो गायन पद्धति के पूरक हैं। हिंदी गानों के गीत वीडियो और कराओके संस्करण व्यापक रूप से ऑनलाइन उपलब्ध हैं, जिससे सीखने वालों को गाने के साथ-साथ गाने के बोल भी सीखने को मिलते हैं। यह दृश्य सहायता शिक्षार्थियों को लिखित शब्दों को उनके बोले गए रूप से जोड़ने में मदद करती है और संदर्भ में शब्दावली और व्याकरण की समझ में सहायता करती है। इसके अलावा, कई भाषा सीखने वाले ऐप और वेबसाइट अब गायन अभ्यास को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करते हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म इंटरैक्टिव गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जहाँ शिक्षार्थी गाकर या गाने के बोल में छूटे हुए शब्दों को भरकर अपने हिंदी कौशल का अभ्यास कर सकते हैं। ये गेमिफाइड दृष्टिकोण सीखने की प्रक्रिया को और अधिक मनोरंजक बनाते हैं, शिक्षार्थियों को नियमित रूप से सामग्री के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

हिंदी सीखने की गायन पद्धति भाषा अधिग्रहण से परे विभिन्न लाभ प्रदान करती है। यह शिक्षार्थियों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराता है, क्योंकि गाने अक्सर हिंदी भाषी आबादी की परंपराओं, मूल्यों और सामाजिक पहलुओं को दर्शाते हैं। हिंदी संगीत में खुद को डुबोने से, शिक्षार्थियों को भाषा की बारीकियों और सांस्कृतिक महत्व की गहरी समझ प्राप्त होती है। कुल मिलाकर, गायन के माध्यम से हिंदी सीखने की आधुनिक पद्धति एक गहन और आनंददायक भाषा सीखने का अनुभव बनाने के लिए संगीत की शक्ति का लाभ उठाती है। यह गीतों के श्रवण और दृश्य पहलुओं को इंटरैक्टिव टूल और संसाधनों के साथ जोड़ता है, जिससे शिक्षार्थियों को हिंदी संगीत और संस्कृति के प्रति सराहना को बढ़ावा देते हुए अपनी शब्दावली, उच्चारण और समझ कौशल विकसित करने की अनुमति मिलती है।

III दूरस्थ शिक्षा दृष्टिकोण

ए. इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया (CD)

इंटरैक्टिव शिक्षण पद्धति उपयोगी और व्यवहार्य पाई गई। छात्रों की सक्रिय भागीदारी, अधिक ध्यान और प्रेरणा के लिए व्याख्यान के दौरान बातचीत की विभिन्न गतिविधियों की सिफारिश की जाती है (गुप्ता एट अल, 2015) | शिक्षा और प्रशिक्षण में इंटरएक्टिव मल्टीमीडिया विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में मल्टीमीडिया के उपयोग के अनुसंधान और प्रथाओं पर जानकारी और ज्ञान साझा करने की आवश्यकता से उभरता है। पुस्तक प्रेरक स्वर और शैली में इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया की योजना, डिजाइन और विकास से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करती है, जो समृद्ध शोध डेटा पेश करती है। विभिन्न शिक्षा और प्रशिक्षण संदर्भों में मल्टीमीडिया की भूमिका और

अनुप्रयोग पर प्रकाश डाला गया है, साथ ही मल्टीमीडिया विकास और उपयोग के मामले के अध्ययन पर भी प्रकाश डाला गया है, जिसमें भाषा सीखने, कार्टोग्राफी, इंजीनियरिंग शिक्षा, स्वास्थ्य विज्ञान और अन्य जैसे क्षेत्र शामिल हैं। विभिन्न अध्यायों के लेखक मल्टीमीडिया सामग्रियों को डिजाइन करने के अपने अनुभवों पर रिपोर्ट करते हैं जो शैक्षणिक रूप से उपयुक्त हैं और लक्ष्य समूहों की संज्ञानात्मक क्षमताओं के लिए उपयुक्त हैं [मिश्रा और शर्मा, 2004 |

बी. टेली-प्रशिक्षण/टेली-शिक्षाप्रद पतों के लिए इंटरैक्टिव टीवी

दुनिया भर के शैक्षणिक प्रतिष्ठानों ने शिक्षा में आईसीटी की प्रस्तुति पर समय और नकदी का योगदान दिया है। मीडिया की नवोन्वेषी उन्नति ने सीखने को दूर करने के लिए निकट और व्यक्तिगत निर्देश को बदलने का आधार दिया (ब्रायंट और हंटन, 2000) | पृथक्करण सीखना सहज ज्ञान युक्त मीडिया और नवाचार के विकास का परिणाम है और विभिन्न आदेशों के निर्देश में इसका व्यापक अनुप्रयोग है (ब्रायंट और हंटन, 2000; हलाबी एट अल।, 2002) | टेली-प्रशिक्षण में निर्देश देने और पृथक्करण सीखने के लिए सहज ज्ञान युक्त प्रसारण संचार का उपयोग शामिल है (हलाबी, 2005) | वेब नवाचार जब सब कुछ हो चुका होता है और डेटा प्रगति मूल रूप से आम तौर पर बिखरे हुए छात्र आबादी के लिए नियमित रूप से पेश किए जाने वाले कार्यक्रमों में भाग लेने वाले सलाहकारों द्वारा प्राप्त की जाती है। इन उपकरणों ने गाइड (लियाव और हुआंग, 2000), वेड, 1999) से दूर (स्थलाकृतिक और क्षणिक रूप से) वयस्कों के बीच सूचना के प्रसार और सीखने के विकास को संभव बनाया। जल्द ही, आईसीटी पारंपरिक (शिक्षण की तुलना में) अपेक्षित व्यक्तियों को भी आकर्षित करने लगा, इस प्रकार उन्नत वातावरण में काम करने वाले छात्रों को पढ़ाने के लिए उपकरण आदर्श साबित हुए। उपरोक्त के विपरीत, किसी भी मामले में यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि हलाबी एट अल। (2002) और हलाबी (2005) ने पाया कि बहीखाता शीर्षक पाठ्यक्रमों में जाने वाले छात्र अलग-अलग सीखने और सहज टीवी उपयोग के बजाय शिक्षण के पारंपरिक तरीके (यानी करीबी और व्यक्तिगत शिक्षा) की ओर झुकते हैं।

C. आभासी शिक्षण वातावरण के माध्यम से शिक्षण

नोट्स, स्लाइड और किताबों के साथ शिक्षा देने की पारंपरिक पद्धति को वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट से तैयार किए गए उपकरणों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाने लगा। वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट (वेब-आधारित लर्निंग एनवायरनमेंट-डब्ल्यूबीएलई), को उस नवाचार के रूप में जाना जाता है जो सीखने में मदद करने और आगे बढ़ने के लिए एक उपकरण के रूप में वेब का उपयोग करता है। आज, इसका उपयोग अलग-अलग शिक्षण में मुख्य उपकरण के रूप में या पारंपरिक शिक्षण के पूरक उद्देश्यों के रूप में किया जाता है (बासिउडिस और डेलांगे, 2009) | जैसा कि बासियौडिस और डेलांगे (2009) ने संकेत दिया है, आभासी सीखने की स्थिति में निम्नलिखित विशेषताएं शामिल हैं:

अधिकांश शिक्षण कार्यक्रम वेब केंद्रित होते हैं (सीखना इंटरनेट पर शुरू और बंद होता है), प्रत्येक पाठ्यक्रम की अपनी विशेष साइट होती है और छात्र इंटरनेट के प्रभारी होते हैं। अधिकांश शिक्षण कार्यक्रमों में शिक्षकों और छात्रों के बीच, छात्रों के बीच और छात्रों और विभिन्न स्रोतों के बीच बहुत अधिक सहयोग होता है। वेब के अलावा, कुछ अन्य डेटा और विशेष उपकरणों का उपयोग बहीखाता दिखाने के हिस्से के रूप में किया जाता है, उदाहरण के लिए, वेबसीटी या

ब्लैकबोर्ड (यानी ऑनलाइन प्रतिबंधात्मक आभासी सीखने की स्थिति) और शायद, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड (आईडब्ल्यूबी)। विशेष रूप से पिछले उपकरण के साथ, सीखना पारंपरिक शिक्षण की प्रक्रिया की तुलना में अप्रत्याशित मार्गों में विशेषज्ञ और उन्नत है।

.डेटा नवाचार का व्यापक उपयोग

सीखने में बिताए गए समय को नियमित रूप से वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट (वीएलई) कहा जाता है। वीएलई पत्राचार और डेटा प्रसार के लिए वेब इनोवेशन का उपयोग करता है जिसका अर्थ है सीखने को आगे बढ़ाना (सील एंड मेन्स, 2001; वेलर, 2007) | आईसीटी के सुधार और शिक्षाप्रद प्रक्रिया में उनके समन्वय के साथ, वर्तमान में नई शिक्षण पद्धतियां बनाने की आवश्यकता है जो छात्रों को बाजार के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण जानकारी और योग्यताएं प्रदान करें (नाइक 1979) | इन प्रणालियों में प्रशिक्षक-केंद्रित शिक्षण अभ्यासों के विपरीत, अधिक छात्र-केंद्रित की उन्नति शामिल है, जबकि उनका प्राथमिक उद्देश्य, बहीखाता पद्धति के विषय को समझने के अलावा, विभिन्न योग्यताओं का विकास भी है (डीलैंग एट अल., 2006) | डेलांगे एट अल. (2003) ने शोध किया कि छात्र वेबसीटी उपकरण को देखता है जो आभासी स्थिति में सीखने का एक उपकरण है। विशेष रूप से, उन्होंने आभासी स्थिति में सीखने और छात्रों को जागरूक करने के बीच संबंध पर विचार किया। अवलोकन से पता चलता है कि आभासी स्थिति की समझ की पूर्ति विशेष रूप से ऑनलाइन पते की पहुंच, घोषणा बोर्ड के उपयोग, ऑनलाइन काम, बातचीत और वीडियो के कार्य और मूल्यांकन से की जाती है | इसके अलावा, डनबर (2004) ने बहीखाता पाठ्यक्रम को एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम में बदलने के बारे में बात की। परीक्षा में वे छात्र शामिल थे जो वेबसीटी नवाचार के साथ पाठ्यक्रम में गए थे। यह जांच विभिन्न शिक्षण रणनीतियों का उपयोग करने की समझ की पुनरावृत्ति पर केंद्रित है, समझ में आता है कि वे सीखने के उपकरणों को कैसे बढ़ा सकते हैं, वर्तमान कक्षाओं के उपयोग पर डेटा और शिक्षाप्रद अनुभव को बढ़ाने के लिए आभासी दिशा के वांछित तरीके पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस बारे में छात्रों के उत्तर कि क्या वे पारंपरिक शिक्षण की ओर झुकते हैं या आभासी स्थिति की ओर, इस तथ्य के प्रकाश में इतने स्पष्ट नहीं थे कि प्रासंगिक स्कोर भिन्न थे |

मैरियट एट अल. (2004) ने वरिष्ठ छात्रों द्वारा सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी प्रौद्योगिकी) के उपयोग और वेब के उपयोग के संबंध में उनके दृष्टिकोण की जांच की। नवाचारों के उपयोग का स्तर हर कॉलेज में अलग-अलग होता है; पुरुष छात्रों को महिला छात्रों की तुलना में पीसी उपयोग, बेहतर वैज्ञानिक और स्प्रेडशीट कौशल की बेहतर सीख मिली। बड़ी संख्या में छात्रों ने पारंपरिक नज़दीकी और व्यक्तिगत शिक्षण के प्रति अपने रुझान की घोषणा की, जबकि वे एक शिक्षण उपकरण के रूप में इंटरनेट के उपयोग के बारे में भी रचनात्मक थे, जब इसकी भूमिका बस स्थिर थी। छात्र-केंद्रित शिक्षण को उन्नत करने के अंतिम लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इंटरनेट के उपयोग के लिए विस्तारित उत्साह, अलग-अलग शिक्षा के लिए विकासशील आवश्यकता के साथ जुड़कर, विभिन्न उन्नत शिक्षा फाउंडेशनों को अपने शैक्षिक कार्यक्रम में आभासी स्थिति प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया ताकि वे बहीखाता पद्धति को प्रशिक्षित करने में सक्षम हो सकें। खुली और अलग सीखने की समझ रखने वाले छात्र |

डी. ब्लैकबोर्ड के उपयोग के माध्यम से शिक्षण

नाइक (1979) ने भारतीय स्कूलों में विभिन्न शिक्षण विधियों का अध्ययन किया। सबसे महत्वपूर्ण था ब्लैकबोर्ड (यानी एक ऑनलाइन विशेष आभासी सीखने की स्थिति), जहां इसका उपयोग करने वाले छात्रों के एक समूह के विचारों पर विचार किया गया था। परीक्षण का मुख्य उद्देश्य पते, अतिरिक्त डेटा और नोट्स, प्रथाओं और संवादों को इकट्ठा करने की व्यवस्था के संबंध में उपयोगिता का आकलन करना था। बहीखाता दिखाने के लिए आभासी सीखने की स्थिति के समाधान के बारे में छात्रों के दृष्टिकोण निश्चित थे; निश्चित रूप से, प्रशिक्षक-अध्ययन सहयोग को सुदृढ़ किया गया और सीखने की दिशा में आगे बढ़ाया गया। इसके अलावा, कामकाजी छात्रों के दृष्टिकोण निश्चित थे क्योंकि शिक्षा के लिए कक्षा में उनकी शारीरिक निकटता की आवश्यकता नहीं थी। किसी भी मामले में, छात्रों ने तर्क दिया कि इसका उपयोग नज़दीकी और व्यक्तिगत शिक्षण के पूर्ण प्रतिस्थापन के लिए एक उपकरण के रूप में नहीं किया जाना चाहिए। जब सब कुछ हो गया, तो आभासी सीखने की स्थिति में हुई इस जांच से पता चला कि छात्र ज्यादातर बुद्धिमान मोड (बियर्ड और हार्पर, 2002; ब्रीन एट अल।, 2003) के विपरीत उपकरण के साथ एक तरफा पत्राचार और संचार की ओर झुकते हैं। , लिंडनर और मर्फी, 2001;)। हाल ही में, बासियौडिस और डेलांगे (2009), अध्ययनकर्ता ने ब्लैकबोर्ड नामक पहले उल्लेखित उपकरण के साथ छात्र संबंध के संबंध में विचार किया है।

IV. चर्चा

इस बात के बावजूद कि दुनिया भर में शिक्षण की सामान्य तकनीकें काफी हद तक तुलनीय हैं, विभिन्न सामाजिक, रूढ़िवादी और शैक्षिक सेटिंग्स में शिक्षण पद्धतियों और शैलियों का समायोजन हमेशा विचार का एक मुद्दा रहा है। नवप्रवर्तन और पीसी अनुप्रयोगों के व्यापक विकास ने दुनिया भर में रोजमर्रा के जीवन के लगभग हर हिस्से को प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति है; उत्तरार्द्ध में हामीदारी अनुप्रयोगों द्वारा भारी बदलाव आया है जो छात्रों को उनकी लिखित और मौखिक क्षमताओं को बढ़ाने में सहायता करता है और इसके अतिरिक्त उन्हें नई क्षमताओं को विकसित करने में सक्षम बनाता है जो उनकी संभावनाओं का विस्तार करती हैं। इस पेपर में प्रदर्शित लेखन सर्वेक्षण दर्शाता है कि आभासी स्थिति में सीखने की दिशा ने उन्नत शिक्षा में सामाजिक परिवर्तन की दिशा में मौलिक योगदान दिया है; यह नए मीडिया की व्यवस्था के माध्यम से पूरा किया जाता है जो नई जानकारी तक पहुंच को सक्षम बनाता है, शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत को आगे बढ़ाता है और इसके अलावा, स्वयं छात्रों के बीच (डोनली और ओ'रूक, 2007; पॉटर और जॉन्सटन, 2006; ज़ेन और मुइलेनबर्ग, 2000) । कुल मिलाकर, यह गारंटी देना अतिशयोक्ति है कि वेब ने सीखने के प्रवाह और गति सहित प्रशिक्षण को सशक्त रूप से प्रभावित किया है, जबकि इलेक्ट्रॉनिक लर्निंग (ई-लर्निंग) ने सापेक्ष शैक्षणिक कार्यक्रम (लियाव और हुआंग) की योजना में नई कठिनाइयां पैदा की हैं। , 2000; लिविंगस्टन और कोंडी, 2006) | समकालीन शिक्षण की बुनियादी रणनीतियों में वीडियो देखना और नाटक करना शामिल है, जबकि छात्रों से बुद्धिमान व्हाइटबोर्ड के माध्यम से पते पर जाने और भाग लेने का भी आग्रह किया जाता है (बोनर, 1999)।

आभासी सीखने की स्थिति के विविध तत्व, उदाहरण के लिए, कमरों का दौरा और स्व-मूल्यांकन, कम्प्यूटरीकृत शिक्षण स्थिति से व्यक्तियों के बीच मौलिक संबंधपरक क्षमताओं और जुड़ाव का समर्थन करते हैं। वास्तव में, नवाचार का उपयोग एक आभासी स्थिति बनाता है, जो

पॉटर और जॉन्सटन (2006) के अनुसार, संभवतः सामान्य सीखने की अनुमति देकर और सहयोग को प्रोत्साहित करके छात्रों को प्रेरित कर सकता है। विशेष लेखन वैश्विक स्तर पर बहीखाता पाठ्यक्रमों के शिक्षण के लिए, नियमित और वर्तमान दोनों तरह के कई उपकरणों के उपयोग का प्रस्ताव करता है। ऐसे पाठ्यक्रमों को व्यावहारिक रूप से प्रोत्साहित करने के लिए डेटा और पत्राचार का नवाचार नए प्रमुख उपकरण हैं। यह बीट्टी एट अल के अनुसार है। (1997) जिन्होंने उदाहरण के लिए, दुनिया भर में विभिन्न प्रशिक्षण आपूर्तिकर्ताओं द्वारा दी जाने वाली सतही जानकारी या सीख के बजाय किसी भी विद्वतापूर्ण विषय में "ऊपर से नीचे तक सीखने" के महत्व के लिए संघर्ष किया। पारंपरिक शिक्षण विधियों में प्रासंगिक जांच, संग्रह परीक्षण, पते और - हाल ही में सहक्रियात्मक शिक्षण, होमवर्क, लेखन बोर्ड का उपयोग और - हाल ही में पीसी कार्यक्रमों और व्यवधान तकनीक जैसी विभिन्न प्रणालियों के अलावा, छात्रों को पते में सहयोग की अनुमति मिलती है उन्हें अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया चुनने का मौका देते हुए। दूसरी ओर, वर्तमान प्रदर्शन तकनीकें, जिसमें समसामयिक प्रोग्रामिंग प्रोग्राम, अलग-अलग शिक्षण और आधी नस्ल निर्देश रणनीतियाँ शामिल हैं, एक समान अंत तक जाती हैं। वैसे भी यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि, छात्रों के अनुभव की जानकारी, शैक्षिक निष्पादन और सीखने की क्षमताओं को सबसे उचित प्रदर्शन रणनीति और शिक्षण अनुप्रयोगों के मिश्रण के चयन के लिए विचार किया जाना चाहिए (बोनर, 1999)। इन परियोजनाओं में परीक्षण, पुनर्मूल्यांकन विविधताएं और विभिन्न निर्णय प्रश्न शामिल हो सकते हैं, जो आलोचना प्रदान करते हैं और छात्रों की नैदानिक क्षमताओं और आत्म-अवलोकन क्षमताओं को आगे बढ़ाते हैं। किसी भी मामले में याद रखें, ऐसी प्रथाओं को सटीक रूप से क्रियान्वित किया जाना चाहिए, ताकि वे "कोडित" और उथली सीखने की शैली को प्रेरित न करें (बॉयस, 1999)। बहीखाता पद्धति में पृथक्करण सीखने के कार्यक्रमों में अंतर्ज्ञानी टीवी के माध्यम से प्रासंगिक जांच और टेली-प्रशिक्षण वाली बुद्धिमान मिश्रित मीडिया सीडी शामिल हो सकती हैं। इसके अलावा, दूरस्थ शिक्षण परियोजनाएं वेब और बुद्धिमान व्हाइटबोर्ड के माध्यम से आभासी सीखने की स्थिति प्रदान कर सकती हैं, जो छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गई हैं, हालांकि पारंपरिक प्रोत्साहन तकनीकें अभी भी बड़ी संख्या में छात्रों द्वारा पसंद की जाती हैं (डनबर, 2004)।

V. निष्कर्ष

उपरोक्त के प्रकाश में, यह तर्क दिया जा सकता है कि अत्याधुनिक शिक्षण तकनीकों, प्रणालियों और उपकरणों को शुरुआत में सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों को अपनाना और समन्वित करना चाहिए जो बाद में प्रत्येक छात्र आबादी के हितों, क्षमताओं और इच्छा के अनुरूप हों। छात्र-शिक्षक सहयोग को सभी मामलों में सक्रिय करते समय एकवचन विरोधाभासों पर भरोसेमंद रूप से विचार किया जाना चाहिए। इसलिए, सीखने की प्रक्रिया अधिक शक्तिशाली और आकर्षक हो जाती है, जबकि छात्रों में अपनी अंतर्दृष्टि का विस्तार करने, वाणिज्यिक केंद्र में केंद्रित रहने के लिए महत्वपूर्ण योग्यताएं और क्षमताएं बनाने और इसके अलावा सभी तरह से तैयार, आविष्कारशील और लाभदायक प्रतिनिधियों के लिए उद्योग की मांगों को पूरा करने की क्षमता होगी। .

सन्दर्भ - ग्रन्थ सूची

1. दत्ता, आर.सी. (2007). शिक्षण और सीखने के आधुनिक तरीके। नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
2. जाधव, एस.डी. (2011). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण के तरीके। नई दिल्ली: सरुप एंड संस।
3. चौधरी, एस.के. (2012). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण की तुलनात्मक अध्ययन। जयपुर: सनराइज पब्लिशर्स।
4. सूद, एस.के. (2014). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण के तरीके। नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. शिंदे, वी.एस. (2016). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन। पुणे: निराली प्रकाशन।
6. यादव, पी. (2018). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण के तरीके: एक तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: लक्ष्मी पब्लिकेशन्स।
7. शर्मा, आर.एन. (2009). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण के तरीके। नई दिल्ली: कनिष्का पब्लिशर्स।
8. वर्मा, एस. (2010). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन। जयपुर: आविष्कार पब्लिशर्स।
9. गुप्ता, एम.के. (2013). शिक्षा में पारंपरिक और आधुनिक पहलू। नई दिल्ली: अनमोल पब्लिकेशन्स।
10. जैन, एम. (2015). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण तकनीकों का तुलनात्मक अध्ययन। जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
11. शर्मा, एस. (2016). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण और सीखने के तरीकों का तुलनात्मक विश्लेषण। नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
12. मिश्रा, आर.के. (2017). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण तकनीकों का तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: एस. चंद पब्लिशिंग।
13. अग्रवाल, आर.के. (2019). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण तकनीकें: एक तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: एक्सेल बुक्स।
14. जोशी, ए. (2013). आधुनिक शिक्षण तकनीकें: एक तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: मित्तल प्रकाशन।
15. सिन्हा, आर. (2014). शिक्षा में पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण: एक तुलनात्मक विश्लेषण। नई दिल्ली: आविष्कार पब्लिशर्स।
16. मिश्रा, ए.के. (2016).शिक्षण की पारंपरिक एवं आधुनिक पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन। जयपुर: सनराइज प्रकाशन।
17. भट्टाचार्य, एस. (2017). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षण तकनीकें: एक भारतीय परिप्रेक्ष्य। कोलकाता: अभिजीत प्रकाशन।
18. सिंह, पी. (2019). आधुनिक शैक्षणिक दृष्टिकोण: एक तुलनात्मक अध्ययन। नई दिल्ली: लक्ष्मी प्रकाशन।